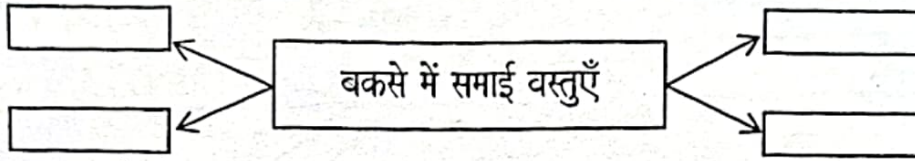


Max. Marks : 40

आज शाम, वह बचपन के अपने कमरे में घुसा। लाइट ऑन की और कोने में रखे बक्से की ओर बढ़ गया। उसके बचपन का साथी-उसका प्यार, लकड़ी का बड़ा-सा बक्सा। वह जब भी यहाँ आता है, एक बार इस बक्से को जरूर खोलकर देखता है। सहज उत्सुकतावश उसने उसे खोला। छठी-सातवीं-आठवीं कक्षा के कोर्स की कुछ पुरानी किताबें, ज्योमेट्री बॉक्स, कीलवाले तलवों के फुटबॉल शूज, एन.सी.सी. की एक्स्ट्रा ड्रेस, पुराना फोटो एलबम... और भी जाने क्या-क्या। बार-बार देखने पर भी इन चीजों को देखने आने की इच्छा-मरती नहीं है। तभी उसकी नजर एकाएक पॉलीथिन की एक थैली पर पड़ी। अरे, इसमें क्या है, अब से पहले तो इसपर नजर कभी पड़ी नहीं थी। उसने उसे उठाकर खोला। अंदर पीली पड़ चुकी कागज की छोटी-छोटी-सी पर्चियाँ मिलीं।

(1) कृति पूर्ण कीजिए :

(2)



(2) (i) गद्यांश में प्रयुक्त दो विदेशी शब्द ढूँढकर लिखिए।

(1)

(1) (2)

(ii) गद्यांश में प्रयुक्त दो शब्द-युग्म ढूँढकर लिखिए।

(1)

(1) (2)

(3) 'बचपन में घटित घटनाओं की यादें' इस विषयपर अपने विचार लिखिए। (25-30 शब्दों में) (2)

विभाग 2 : पद्य

2. (अ) : निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए : (04)

गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़-गढ़ काढ़ै खोट ।
 अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट ॥
 जाको राखै साइयाँ, मारि न सककै कोय ।
 बाल न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होय ॥

नैनो अंतर आव तूँ, नैन झाँपि तोहि लेवँ ।
 ना मैं देखौँ और को, ना तोहि देखन देवँ ॥
 लाली मेरे लाल की, जित देखौँ तित लाल ।
 लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल ॥

(1) उचित जोड़ियाँ मिलाए:

(2)

अ	ब
लाली	कुंभ
बाल	लाल
सिष्य	कुम्हार
गुरु	बाँका

(2) पद्यांश के पहले दो दोहों का सरल अर्थ लिखिए।

(2)

(आ) : निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(04)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए :

(2)

(i) सहम कर काँपने वाली -

[]

(ii) अर्घ्य की सामग्री -

[]

(iii) किरण की स्थिति -

[]

(iv) इसने देखे सपने -

[]

गरजे मेघ

सहमकर काँपी

कच्ची दीवार ।

रवि चढ़ाए

निर्मल किरणों से

धरा को अर्घ्य ।

आ के पसरी

थकी हारी किरण

धरा की गोद ।

खुली आँखों ने

जीवन भर देखे

बंद सपने ।

(2) पद्यांश की आरंभ की छह पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।

(2)

विभाग 3 : व्याकरण

3. (अ) : सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

(08)

(1) मानक वर्तनी के अनुसार सही शब्द छाँटकर लिखिए :

(1)

(i) प्राकृतिक , प्राकृतीक , प्राक्रीतिक , प्राकृतिक -

(ii) आरक्छन , आरक्षन , अरक्षण , आरक्षण -

(2) निम्नलिखित अव्ययों में से किसी एक अव्यय का अर्थपूर्ण वाक्य में प्रयोग कीजिए।

(1)

(i) अरेरे !

(ii) धीरे - धीरे

(3) कृति पूर्ण कीजिए : (कोई एक)

(1)

संधि शब्द	संधि - विच्छेद	संधि भेद
(i) उद्यान		
अथवा		
(ii)	परम + आनंद	

(4) अधोरेखांति वाक्यांश के लिए उचित मुहाँवरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए।

(1)

(आँखे खुली रह जाना , चौपट हो जाना)

ओला - वृष्टि से खेत में गेहूँ की खड़ी फसल बरबाद हो गई।

अथवा

निम्नलिखित मुहावरे में से किसी एक मुहावरे का अर्थ लिखकर उचित वाक्य में प्रयोग कीजिए।

(i) अंक में भरना

(ii) मन मारना

(5) कालभेद पहचानना तथा काल परिवर्तन करना :

(2)

(i) कहाँ तक चल रहे हैं? (काल भेद पहचानिए)

(ii) सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए : (सिर्फ एक)

(1) पानी अब निर्मल नहीं रहा है। (सामान्य भविष्य काल)

(2) मुझे देखते ही चाय हाजिर कर देती है। (पूर्ण वर्तमानकाल)

(6) वाक्य के भेद पहचानकर लिखिए :

(2)

(i) वह पशु-पक्षियों के बीच बातें करता दिखाई देता। (रचना के अनुसार)

(ii) अधिक वर्षों के लिए कौन जिम्मेदार हैं? (अर्थ के अनुसार)

विभाग 4 : रचना विभाग

4. (अ) : सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

(12)

(1) पत्रलेखन :

(4)

निम्नलिखित जानकारी के आधार पर पत्रलेखन कीजिए :

शरद/शारदा इंगले, तुकाई सदन, तिलक नगर, चालीस गाँव से व्यवस्थापक, मनुश्री पुस्तक भंडार, महात्मा नगर, जलगाँव को हिंदी की व्याकरण की पुस्तकों मँगवाने हेतु पत्र लिखता/लिखती है।

अथवा

शिर्डी से अपूर्व/अपूर्वा कठाले हाईस्कूल परीक्षा में प्रथम आने पर बधाई देते हुए अपने मित्र/सहेली उदय/उदया पत्र लिखता/लिखती है।

(2) कहानी लेखन :

(4)

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर 60 से 70 शब्दों में कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए तथा सीख लिखिए।

एक सुंदर वन ... इंद्र का आगमन ... वन का सौंदर्य देखना ... सूखे पेड़ पर तोते को देखना ... सवाल पूछना ... तोते का जवाब ... इंद्र का वरदान ... सीख

अथवा

निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर गद्यांश में एक-एक वाक्य में हों।

मनुष्य सुख के पीछे लगा रहता है। सुख पाने की खुश बनने की वह जीवनभर कोशिश करता रहता है। जीवन में आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद उसे सुख मिलता है। उत्सव के दिनों में भी उसे सुख मिलता है। जीवन में आवश्यकताओं का ताता लगा रहता है। एक की पूर्ति के बाद दूसरी सामने आती है। इसलिए पूर्ति के बाद मिलने वाला सुख अधिक समय तक नहीं रहता।

उत्सव में हम किसी आवश्यकता का अनुभव नहीं करते। हम सारे काम काज छोड़ बैठते हैं। खुशियाँ मनाते हैं, मेहमानों से मिलते हैं, खाते हैं, खिलाते हैं। अपनी चिंताएँ भूल जाते हैं।

4. (आ) : निबंध लेखन :

(4)

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 60 से 70 शब्दों में निबंध लिखिए।

- (1) जीवन में गुरु का महत्त्व
- (2) अगर परीक्षाएँ न होतीं ...
- (3) फटी पुस्तक की आत्मकथा